International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Nov-Dec- 2022, Volume-9, Issue-6
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय साहित्यकारों का योगदान

दीक्षा राय

शोध छात्रा हिंदी विभाग,विश्व भारती ,पश्चिम बंगाल

मुक्तेश्वर नाथ तिवारी

प्रोफेसर - हिंदी विभाग विश्व भारती ,पश्चिम बंगाल

सार

19वीं सदी की शुरुआत में, साहित्य में राष्ट्रवादी विचारों का उदय हुआ और कई लेखकों ने देशभक्ति और राष्ट्रवादी उद्देश्यों के साथ लिखना शुरू किया। साहित्य ने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत किया और लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। साहित्य ने लोगों को स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता की आवश्यकता साहित्य में व्यक्त की गई। भारत स्वतंत्रता को एक प्राकृतिक स्थिति के रूप में महसूस करता है जिसकी किसी भी व्यक्ति को आकांक्षा करनी चाहिए।

मुख्य शब्द: *स्वाधीनता, आंदोलन, साहित्यकारों*

परिचय:

इतिहास की हर बड़ी क्रांति में साहित्य ने अहम भूमिका निभाई है। इस तरह इसने भारतीय इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता-पूर्व साहित्य की भूमिका को याद करना अनिवार्य होगा। समकालीन लेखक साहित्य का उपयोग देशभक्तिपूर्ण उद्देश्यों और राष्ट्रीय विमर्श के लिए करते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर, सुब्रमण्यम भारती, जोश मलीहबली मोहम्मद इकबाल, बकीम चंद्र चट्टोपाध्याय, मोहम्मद अली, जौहर और काजी नजरूल इस्लाम जैसे लेखकों और कवियों ने साहित्य, कविता और प्रवचन को अंग्रेजों के क्रूर शासन के खिलाफ एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जो स्वतंत्रता के विचारों को ऊपर उठाता है और लोगों को भारत के लिए ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। सरोजिनी नायडू बेगम रोकैया जैसी महिला नेता महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय नीति में भाग लेने के लिए उकसाती थीं। बकीम चंद्र चट्टोपाध्याय ने साहित्य का उपयोग करके देशभक्ति का संदेश फैलाया। उन्होंने अपने पात्रों, आम लोगों द्वारा किए गए कई देशभक्ति कार्यों और बलिदानों पर प्रकाश डाला, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए लड़ने और आनंदमठ (1882) में "माँ" की सेवा करने के लिए अपने घर और परिवार खो दिए थे। उन्होंने अप्रशिक्षित सैनिकों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति का चित्रण किया, जो प्रशिक्षित ब्रिटिश सैनिकों को देशभक्ति और राष्ट्रवाद की भावना का प्रतिनिधित्व करने वाले दृढ़ संकल्प के साथ पीटने में सफल रहे। इस उपन्यास पर ब्रिटिश साम्राज्य ने प्रतिबंध लगा दिया था और आज़ादी के बाद भारत सरकार ने इसे हटा लिया था। हमारा राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम पहली बार 'आनंदमठ' उपन्यास में एक कविता के रूप में प्रकाशित हुआ था। पात्र लोगों को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित और आग्रह करते हैं। प्रतिबंधित होने के बावजूद, आम लोग ब्रिटिश अधिकारियों के सामने कविता सुनाते थे और इस कृत्य के लिए कई लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। वंदे मातरम के पहले दो छंदों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा 1937 में बलिदान की परंपरा और ब्रिटिश अंग्रेजों के खिलाफ एक देश को एक साथ लाने में इसकी सफलता के कारण राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया था। बंकिम चंद्र ने 1884 में अपना उपन्यास

देवी चौधुरानी प्रकाशित किया। यह उपन्यास महिलाओं के लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरणा बन गया। आनंदमठ की तरह इस उपन्यास में भी स्त्री ही मुख्य पात्र है।

दोनों उपन्यासों में महिलाओं ने आजादी की लड़ाई के लिए हथियार उठाए और प्रेम के मूल्यों को भी व्यक्त किया। चट्टोपाध्याय के अंदर यह समझने की क्षमता थी कि स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने के लिए राष्ट्र को महिलाओं के सहयोग की आवश्यकता है, जैसा कि आनंदमठ में शांति कहती हैं, "कौन सा नायक अपनी पत्नी के सहयोग के बिना कभी नायक बना?" भारतीय अंग्रेजी साहित्य में एक और विश्व प्रसिद्ध नाम रवीन्द्रनाथ टैगोर है। वह उपन्यासकार, नाटककार, लघु कथाकार, संगीतकार, दार्शनिक, चित्रकार, शिक्षाविद्, सुधारक और हर क्षेत्र में एक आलोचक हैं और उन्होंने अपने लिए खूब कमाई की है। अपनी अमर महान कृति गीतांजलि के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दुनिया के सामने यह साबित कर दिया कि भारतीय लेखक विदेशी भाषा में अपनी साहित्यिक आकांक्षा को सहजता से व्यक्त करने में सक्षम हैं। भारतीय साहित्य में पश्चिमी प्रभाव सिर्फ लेबल के तहत था, इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारतीय अंग्रेजी साहित्य ने अपना सामान्य नाम प्राप्त कर लिया था। टैगोर के उपन्यासों का परिवेश चिंतनशील और प्रतिनिधि है। उन्होंने बांग्ला और अंग्रेजी में मैत्रीपूर्ण और सहजता से चित्रकारी की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान तेरह उपन्यास लिखे और अपने नौ उपन्यासों का भारतीय अंग्रेजी में अनुवाद किया। उनकी अनुवादित कृतियाँ गोरा, द होम एंड द वर्ल्ड, द व्रेक, बिनोदिनी आदि हैं।

उनके उपन्यासों के पात्र यथार्थवादी और स्वाभाविक हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में बंगाल की सामाजिक धार्मिक संस्कृति का चित्रण किया तथा महिलाओं की समस्याओं को भी उजागर किया। उन्होंने विभिन्न सामाजिक परिवेशों के माध्यम से विभिन्न मानवीय रिश्तों का चित्रण और विश्लेषण किया। उन्होंने पहली बार 20 साल की उम्र में 'वाल्मीकि प्रतिभा' लिखी थी। उनके काम में 'भावना का खेल और न ही कार्रवाई' को स्पष्ट करने की कोशिश की गई थी। उन्होंने अंग्रेजी और बंगाली कार्यों में दार्शनिक और रूपक विषयों का उपयोग किया। त्रिमूर्ति मुल्क राज आनंद राजा राव और आरके नारायण ने अपने अद्वितीय काम और साहित्यिक शैली से भारतीय अंग्रेजी साहित्य को स्थिर और मजबूत किया। आर.के. नारायण ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारतीय अंग्रेजी लेखन के एक और महान लेखक हैं। उनमें समसामयिक समाज के चित्रण से पाठकों को मंत्रमुग्ध करने की क्षमता थी। उन्होंने एक सामान्य परिवार के सामाजिक-आर्थिक पहलुओं का चित्रण किया है। उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने लेखन में इतनी सरल भाषा का प्रयोग किया कि आम लोग भी उसे आसानी से समझ सकें। वह व्यंग्यपूर्ण हास्य का उपयोग करता है जो मानव स्वभाव की विचित्रताओं की पड़ताल करता है। उन्होंने थॉमस हार्डी के वेसेक्स की तरह अपने उपन्यास में एक शहर मालगुडी को जन्म दिया। उनके उपन्यास काल्पनिक शहर मालगुडी के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उनका पहला उपन्यास स्वामी एंड फ्रेंड्स काल्पनिक शहर मालगुडी पर आधारित है और इसे चरित्र स्वामीनाथन की आंखों और अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। आर.के. नारायण ने ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है जो दुनिया को भारतीय सांस्कृतिक पहचान और दर्शन का वर्णन करता है। उनके अन्य लोकप्रिय उपन्यास बैचलर ऑफ आर्ट, द फाइनेंशियल एक्सपर्ट, द गाइड, वेटिंग फॉर महात्मा हैं। आर.के. नारायण का लेखन सात दशकों तक फैला है और भारतीय अंग्रेजी उपन्यासों के इतिहास में एक उल्लेखनीय स्थान रखता है। उन्होंने सरल अंग्रेजी भाषा में किरदारों को चित्रित करने में महारत हासिल कर ली।

मुल्क राज आनंद अंग्रेजी के शुरुआती भारतीय उपन्यासकारों में से थे। दरअसल, ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारतीय अंग्रेजी साहित्य ने कविता, गद्य, नाटक और उपन्यासों पर खूबसूरती से कब्जा कर लिया था। उनकी लघु कहानी द लॉस्ट चाइल्ड में गद्य, कविता और नाटक सहित कई लिखित कार्य हैं। उनके तीन उपन्यास कुली, अनटचेबल और द वूमन एंड द काउ भारत में दलित और वंचित लोगों की कहानियाँ हैं। उन्होंने चरित्र, दुखों की कहानी, विपत्तियों का चित्रमय विवरण दिया। अनटचेबल उपन्यास का उद्देश्य जातिवाद की बुराई को उजागर करना और पेशे पर आधारित मुद्दे को सामने लाना

है। यह पाठकों के लिए जाति व्यवस्था के पीड़ितों की दुर्दशा का अनुभव करने का एक अनूठा अवसर है। एक और उपन्यास कुली न केवल मूनू बल्कि उसके जैसे हजारों लोगों द्वारा सामना की गई गरीबी और शोषण का विनाशकारी विवरण है। मुल्क राज आनंद देश की काली सच्चाई को उजागर करने के लिए यथार्थवाद की अपनी विशेषता का उपयोग करते हैं जहां जन्म के समय किसी की स्थिति जीवन में उसके प्रक्षेप पथ की गारंटी देती है। यह यकीनन पीड़ा को और भी गहरा कर देता है क्योंकि बेहतर भविष्य की कोई उम्मीद नहीं है। दोनों उपन्यास एक कठोर सामाजिक संरचना में दबे-कुचले गरीबों और बहिष्कृत आर्थिक कठिनाइयों और भावनात्मक अपमान की गुहार हैं।

राजा राव इस काल के महान लेखकों में से एक हैं। पाठक ने उनके उपन्यास कांतापुरा (1938) में गांधीवादी आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा। लेखक ने एक छोटे से गाँव पर ध्यान केंद्रित किया जहाँ के ग्रामीण स्वतंत्रता संग्राम से प्रभावित थे। जैसा कि उपन्यास में दर्शाया गया है स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले लोगों की संख्या। राजा राव ने अपने उपन्यासों का उपयोग राष्ट्र में गांधीवादी विचार और संदेश फैलाने के लिए किया। उपन्यासकार ने भारतीय समाज पर गांधी के प्रभाव का प्रतिनिधित्व किया और बताया कि कैसे उनकी शिक्षा लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। आजादी के बाद उन्होंने द कैट एंड द शेक्सपियर (1956), द सर्पेंट एंड द रोप (1960), कॉमरेड किरिलोव (1976) जैसे उपन्यास लिखे। उनके उपन्यासों में महिला पात्र जो घरेलू अन्याय और अत्याचारी परंपरा से पीड़ित हैं। महिला पात्र महत्वाकांक्षी हैं, लेकिन उनकी महत्वाकांक्षाएं धूमिल हैं और उपन्यास द सर्पेंट एंड द रोप (1960) में सावित्री की तरह पत्नी की भूमिका निभाती हैं। उनके लेखन में भारतीय संस्कृति निहित थी लेकिन वे महिलाओं की समस्याओं का ठोस समाधान निकालने में असफल रहे। ये तीन लेखक ही हैं जिन्होंने उस क्षेत्र को परिभाषित किया जिसमें भारतीय उपन्यास को संचालित होना था। उन्होंने इसकी धारणाएँ स्थापित कीं; उन्होंने इसके मुख्य विषयों की रूपरेखा तैयार की, इसके पात्रों के पहले मॉडलों को मुक्त किया और इसके विशेष तर्क को विस्तृत किया। उनमें से प्रत्येक ने एक आसान, प्राकृतिक मुहावरे का उपयोग किया जो ब्रिटिश विरासत की अस्पष्टता से अप्रभावित था। उनकी भाषा को ब्रिटेन के धुँधले स्वाद से मुक्त कर दिया गया है और क्रूर गर्मी और शानदार रोशनी की पूरी तरह से नई सेटिंग में स्थानांतरित कर दिया गया है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत: लेखन और विचार

के.आर.श्रीनिवास अयंगर ने अपनी पुस्तक इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश में लिखा है, "अगर अंग्रेजी आज भारत में एक लिंक-भाषा है, तो अंग्रेजी में भारतीय लेखन, अपने आप में एक विशिष्ट साहित्य होने के अलावा, भारत के संदर्भ में एक लिंक-साहित्य भी है। बहुलवादी साहित्यिक परिदृश्य।"

आइए अब अंग्रेजी में इंडियन राइटिंग शब्द की संक्षेप में जांच करें। जब हमारे सामने कोई चीज आती है तो हम चीजों को उनकी विशिष्टता और बाकी सभी चीजों से उनके अंतर्संबंध में देखते हैं। एक कविता या उपन्यास की निश्चित रूप से अपनी स्वायत्तता होती है, लेकिन इसका जुड़ाव (अयंगर द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द) बड़े पैमाने पर बढ़ते हुए साहित्य से भी होता है। इंडो एंग्लियन साहित्य भारतीय लोगों की व्यावहारिक और रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। अंग्रेजी में भारतीय लेखन ही भारतीय साहित्य है। लेकिन भारतीय साहित्य में हिंदी, मराठी, मलयालम और कई अन्य भाषाएँ शामिल हैं। अंग्रेजी में भारतीय लेखन उन आवाजों में से एक है जिसमें भारत बोलता है। अंग्रेजी में भारतीय लेखन एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो विचार, भावना, भावना और अनुभव से भारतीय होता है और जो अभिव्यक्ति के लिए अंग्रेजी के अनुशासन के अधीन होता है। अंग्रेजी में भारतीय लेखन को इंडो एंग्लियन लिटरेचर भी कहा जाता है।

एंग्लो-इंडियन साहित्य भारत-अंग्रेजी साहित्यिक संबंधों का उत्पाद है। जब इंग्लैंड और भारत एक साथ आए, तो भारत के इतिहास में इस विकास से इंडो एंग्लियन साहित्य की उत्पत्ति हुई।

अंग्रेजी में भारतीय लेखन की अपनी विशिष्टता है लेकिन इसे राष्ट्रमंडल साहित्य के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्य तौर पर, राष्ट्रमंडल साहित्य एक अस्पष्ट शब्द है जो पूर्व ब्रिटिश उपनिवेशों या उस स्थान पर लिखे गए अंग्रेजी भाषा के कार्यों को परिभाषित करता है जिन्हें प्रभुत्व का दर्जा प्राप्त था। यह उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य (उत्तर-औपनिवेशिक साहित्य, नई अंग्रेजी साहित्य और नई अंग्रेजी साहित्य) के अंतर्गत भी आ सकता है, यह साहित्यिक लेखन का एक निकाय है जो मध्य पूर्व, एशिया और अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशीकरण के बौद्धिक प्रवचन का जवाब देता है।

भारत की विजय, जिसे प्लासी के युद्ध (1757) से शुरू हुआ माना जा सकता है) व्यावहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्यकाल के अंत तक पूरी हो गई थी। यह किसी भी तरह से सहज मामला नहीं था क्योंकि लोगों का उबलता असंतोष इस अवधि के दौरान कई स्थानीय विद्रोहों में प्रकट हुआ। हालाँकि, 1857 का विद्रोह, जो मेरठ में सैन्य सैनिकों के विद्रोह के साथ शुरू हुआ, जल्द ही व्यापक हो गया और ब्रिटिश शासन के लिए एक गंभीर चुनौती बन गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 से 1947 तक की अवधि को संदर्भित करता है जब भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर गौर करने से पहले, भारत में अंग्रेजी की उत्पत्ति को जानना आवश्यक है जिसने बाद में अंग्रेजी में भारतीय लेखन को जन्म दिया। इंग्लैण्ड के आगमन के साथ अंग्रेज़ भारत आये। सोचा गया कि कंपनी को भारत के कल्याण में कोई दिलचस्पी नहीं है, ऐसे व्यक्ति (कंपनी के नौकर) थे जैसे वॉरेन हेस्टिंग्स जिन्होंने 1781 में कलकत्ता मदरसा की स्थापना की, सर विलियम जोन्स जिन्होंने 1784 में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल का आयोजन किया, सर थॉमस मुनरो आदि।

भारत में अंग्रेजी के विकास या नींव पर सबसे बड़ा प्रभाव तब पड़ा जब 1813 में कंपनी का वाणिज्यिक एकाधिकार समाप्त हो गया और ब्रिटिशों ने भारत में पुलिस के साथ-साथ शैक्षिक और सभ्य या प्रशासनिक कार्यों को भी अपने हाथ में ले लिया। मिशनरियों ने प्रवेश करना शुरू कर दिया, और उन्होंने प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना में मदद की जो व्याकरण की पुस्तकों, शब्दकोशों और अनुवादों आदि की छपाई का काम करती थी। प्रिंटिंग प्रेस से समाचार पत्रों का जन्म हुआ और हिक्की का बंगाल गजट पहला समाचार पत्र था। अंत में अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने वाले निजी स्कूल आए। और धीरे-धीरे कॉलेज अस्तित्व में आये। कलकत्ता में हिंदू कॉलेज 1817 में स्थापित ऐसा ही एक कॉलेज था। राजा राममोहन राय इस कॉलेज के उत्पादों में से एक थे।

भारतीयों में अंग्रेजी के आगमन से चरण दर चरण विभिन्न परिवर्तन आये। सर्वप्रथम अंग्रेजी के कारण भारतीयों का परिचय यूरोप के साहित्य, विज्ञान तथा अन्य विषयों तथा सभ्य विश्व की संस्कृति तथा ईसाई धर्म से हुआ। भारतीय इस विचित्रता से आकर्षित हुए और इसका स्वागत किया। राजा राममोहन राय जैसे लोगों ने ब्रह्म समाज नामक एक नए धर्म की स्थापना की, जिसने एकेश्वरवाद की वकालत की और इस्लाम और ईसाई धर्म के सिद्धांतों को आत्मसात किया। राजा राममोहन राय न केवल भारत में अधिक अंग्रेजी चाहते थे बल्कि वे अधिक अंग्रेज भी चाहते थे। इस प्रकार उन्होंने लिखा, "...यूरोपीय लोगों द्वारा भारत में समझौता कम से कम प्रयोगात्मक रूप से किया जाना चाहिए..." उनके नक्शेकदम पर चलने वाले अन्य लोगों में केशव चंद्र सेन भी थे, जिन्होंने इंग्लैंड और भारत तथा हिंदू धर्म और ईसाई धर्म के बीच संबंध बनाने की कोशिश की। इस प्रकार उन्होंने लिखा: "तो फिर, भारत इंग्लैंड से व्यावहारिक धार्मिकता सीखे। इंग्लैंड को भारत से भक्ति, आस्था और प्रार्थना सीखने दीजिए।"

1835 और 1855 के बीच के 20 वर्षों के दौरान - मैकाले और वुड व्यवस्था के दौरान अंग्रेजी जंगल की आग की तरह फैल गई, लेकिन जल्द ही लोगों को स्थानीय भाषाओं या मूल भाषाओं की उपेक्षा करने और अपनी संस्कृति और धर्म से अलग संस्कृति और धर्म अपनाने के नुकसान का एहसास होने लगा। . शायद मिशनरी प्रथाओं के प्रतिशोध में दयानंद सरस्वती ने 1857 में आर्य समाज का आयोजन किया जिसका उद्देश्य हिंदू धर्म को संरक्षित और शुद्ध करना और यहां तक कि गैर हिंदू

का धर्मांतरण करना था। इसके बाद प्रार्थना समाज आया जिसकी स्थापना 1867 में हुई थी। इसने भी खुद को हिंदू समुदाय से अलग नहीं किया और ईसाई धर्म के साथ खिलवाड़ किया। यह ज्ञानदेव, तुकाराम और अन्य जैसे महाराष्ट्र के पैगंबरों और संतों की परंपरा पर केंद्रित था।

इस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के शुरुआती दौर में हम देखते हैं कि इंग्लैंड और ब्रिटिश राज के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण बदल रहा था। सामाजिक, शैक्षिक और धार्मिक सुधार के लिए एक आंदोलन आदर्शवाद और बौद्धिक अनुशासन की क्षमता वाले एक युवा द्वारा शुरू किया गया था। ये लोग 'डेरोज़ियो मेन' की तरह नहीं थे। इनमें से काशीनाथ त्रिंबक तेलंग और महादेव गोविंद रानाडे थे। उनके द्वारा समर्थित सुधारों ने राजनीतिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

रानाडे एक विद्वान, अर्थशास्त्री और न्यायविद् थे। उन्होंने अंग्रेजी में अपनी क्लासिक राइज ऑफ द मराठा पावर लिखी; और उनका मानना था कि भारत की विभिन्न जातियाँ वास्तव में एक राष्ट्र में मिल सकती हैं। बाद में, गोपाल कृष्ण गोखले, जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान संस्थापक सामाजिक और राजनीतिक नेताओं में से एक थे, रानाडे के शिष्य बन गए, और रानाडे द्वारा शुरू किए गए काम को आगे बढ़ाया। रानाडे और तेलंग की तरह, सर नारायण चंदावरकर भी पत्रकार, न्यायाधीश, वक्ता, राजनीतिज्ञ, प्रार्थना समाजवादी, सभी एक थे। सामाजिक सुधार और शिक्षा तथा साहित्य पर उनके भाषण और लेखन उनके विशाल ज्ञान और अनुभव पर आधारित थे। वह एक अग्रणी सुधारक थे और 1900 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे। कई विद्वानों और भारतीय लोगों में से एक और प्रारंभिक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख व्यक्तित्व दादाभाई नौरोजी थे। उन्होंने एलफिंस्टन कॉलेज में पढ़ाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का श्रेय ए.ओ. के साथ नौरोजी को भी दिया जाता है। ह्यूम और दिनशॉ एडुल्जी वाचा। उनकी पुस्तक पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया ने भारत के धन के ब्रिटेन में जाने की ओर ध्यान आकर्षित किया। यह पुस्तक अंग्रेजी में लिखी गई थी और यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है। अपनी पुस्तक में वे लिखते हैं: "मुझे केवल यह कहना है कि भारत के लोगों की राजस्व व्यय में, और इसलिए देश की अच्छी सरकार में थोड़ी सी भी हिस्सेदारी नहीं है।"

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शुरुआत में शिक्षित कुलीन वर्ग ने अंग्रेजी में लिखा और बाद में आम जनता के बीच स्वराज और स्वतंत्रता के विचारों को प्रचारित किया। विभिन्न समाचार पत्र, पत्रिकाएँ स्थानीय भाषाओं में लिखी गईं।

अधिक से अधिक लेखकों ने देशभक्ति के उद्देश्य से साहित्य का उपयोग करना शुरू कर दिया। यहां तक कि जब ब्रिटिश शासन से मुक्ति अभी तक किसी भी प्रमुख राजनीतिक संगठन या आंदोलन के लिए एक कार्यक्रम के रूप में सामने नहीं आई थी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस केवल संवैधानिक आंदोलन से चिंतित थी, तब भी पराधीनता का एहसास और स्वतंत्रता की आवश्यकता स्पष्ट रूप से व्यक्त होने लगी थी। साहित्य। समय बीतने के साथ, जैसे-जैसे स्वतंत्रता आंदोलन ने लोगों के बड़े वर्गों को आकर्षित करना शुरू किया, और स्वतंत्रता की मांग अधिक प्रबल हो गई, साहित्य ने लोगों के बढ़ते आदर्शवाद को मजबूत किया। लेकिन इसने कुछ और भी किया. लोगों को देश की आज़ादी के लिए हर तरह का बलिदान देने के लिए प्रेरित करने के अलावा, साहित्य ने राष्ट्रवादी आंदोलन और उसके नेताओं की कमजोरियों को भी सामने लाया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रसिद्ध लेखक रवींद्रनाथ टैगोर, श्री अरबिंदो, गांधी और जवाहरलाल नेहरू हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साम्राज्यवाद का विरोध किया और भारतीय राष्ट्रवादियों का समर्थन किया, और ये विचार सबसे पहले मनस्त में प्रकट हुए, जिसकी रचना अधिकतर उनके बीसवें दशक में हुई थी।

श्री अरबिंदो एक भारतीय राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता सेनानी, दार्शनिक, योगी, गुरु और कवि थे। वह ब्रिटिश शासन से आजादी के लिए भारतीय आंदोलन में शामिल हुए, कुछ समय के लिए इसके प्रभावशाली नेताओं में से एक बन गए और फिर एक आध्यात्मिक सुधारक में बदल गए, जिन्होंने मानव प्रगति और आध्यात्मिक विकास पर अपने दृष्टिकोण का परिचय दिया। उनकी मुख्य साहित्यिक कृतियाँ द लाइफ डिवाइन हैं, जो इंटीग्रल योग के सैद्धांतिक पहलुओं से संबंधित है; योग का संश्लेषण, जो इंटीग्रल योग के व्यावहारिक मार्गदर्शन से संबंधित है; और सावित्री.

गांधी भारतीय राष्ट्रवाद के सर्वप्रमुख नेता थे। गांधी एक विपुल लेखक थे। गांधीजी के शुरुआती प्रकाशनों में से एक, हिंद स्वराज, जो 1909 में गुजराती में प्रकाशित हुआ था, को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के बौद्धिक खाका के रूप में पहचाना जाता है। दशकों तक उन्होंने गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में हरिजन सहित कई समाचार पत्रों का संपादन किया; दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन और अंग्रेजी में यंग इंडिया और भारत लौटने पर एक गुजराती मासिक नवजीवन। गांधी ने अपनी आत्मकथा, द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ सहित कई किताबें भी लिखीं।

उनकी अन्य आत्मकथाओं में शामिल हैं: दक्षिण अफ्रीका में उनके संघर्ष के बारे में सत्याग्रह, हिंद स्वराज या इंडियन होम रूल, एक राजनीतिक पुस्तिका, और जॉन रस्किन की अनटू दिस लास्ट की गुजराती में एक व्याख्या।

नेहरू अंग्रेजी के एक प्रखर लेखक थे और उन्होंने कई किताबें लिखीं, जैसे द डिस्कवरी ऑफ इंडिया, ग्लिम्पसेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री और उनकी आत्मकथा, टुवार्ड फ्रीडम।

शेक्सपियर, मार्लो और उनके जैसे अन्य लोगों की तरह, हालांकि हम राममोहन रॉय, रानाडे, गांधी, टैगोर और अन्य को भारतीय साहित्य के कवियों और योगदानकर्ताओं के रूप में सूचीबद्ध नहीं कर सकते हैं, फिर भी यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन दिग्गजों ने भाषा को अपने विचारों को संप्रेषित करने के सशक्त साधन के रूप में इस्तेमाल किया। भारत और दुनिया के लिए. ये दिग्गज स्वतंत्र भारत के निर्माताओं में से थे और उन्होंने जो कहा और लिखा उसे हमारे राष्ट्रीय साहित्य के रूप में संजोया जाना चाहिए। अंग्रेजी हमारी राष्ट्रीय भाषाओं में से एक है और इंडो-एंग्लियन साहित्य भी हमारे राष्ट्रीय साहित्य में से एक है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता-पूर्व का साहित्य स्वतंत्रता संग्राम के पहलू से संबंधित है। स्वतंत्रता-पूर्व साहित्य के नायक आम पुरुष और महिलाएं थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया और नायक बन गए, हालांकि वे साक्षर और बौद्धिक नहीं थे। वे अलग-अलग वर्गों, अलग-अलग जातियों, अलग-अलग क्षेत्रों और अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित हैं। लेकिन उनके जीवन का लक्ष्य भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति दिलाना था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय साहित्य हमें साफ-सुथरी श्रेणियों से दूर जाने के लिए मजबूर करता है। हमने स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में जो कहा है - विरोधाभासी ताकतों की निरंतर बातचीत - वह समग्र रूप से आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण के बारे में सच है। सीधे शब्दों में कहें तो ऐसा नहीं है कि एक व्यक्ति या समूह धर्मनिरपेक्ष, प्रगतिशील और राष्ट्रवादी है जबकि दूसरा व्यक्ति या समूह प्रतिक्रियावादी और सांप्रदायिक है। समाज और उसमें रहने वाले लोग इतने जटिल हैं कि ऐसे साफ-सुथरे वर्गीकरण की अनुमति नहीं दी जा सकती। यह वह सबक है जो साहित्य हमें सबसे अच्छी तरह सिखाता है। इतिहासकारों और अन्य वैज्ञानिकों को यह सबक सीखना चाहिए।

संदर्भ

[1] राव, आर. (2005). कंठपुरा. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

[2] रे, एम.के. (2007)। अंग्रेजी में अटलांटिक कंपेनियन साहित्य। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी) लिमिटेड।
[3] अयंगर, एस.के. (1983)। अंग्रेजी में भारतीय लेखन, नई दिल्ली।
[4] चट्टोपाध्याय, बंकिमचंद्र। आनंदमठ. नई दिल्ली: ओरिएंट पेपरबैक, 1992।
[5] चटोपाध्या, बकीमचंद्र देवी चौधुरानी। याली ड्रेन क्रिएशंस, 2014
[6] टैगोर, रवीन्द्रनाथ. गीतांजलि. डायमंड पॉकेट बुक्स, 2012
[7] नारायण, आर.के. स्वामी और मित्र। विंटेज क्लासिक्स पेपरबैक, अगस्त 2000
[8] आनंद, मुल्क राज. न छूने योग्य। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 2001. प्रिंट.3.
[9] आनंद, मुल्क राज. कुली. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 1993.
[10] भट्टाचार्य, भबानी। इतनी सारी भूखें. नई दिल्ली: जैको पब्लिशिंग हाउस, 1964।